श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

# शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका | नवम्बर - 2018 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

1

2

1. मदुराई स्थित तमिल विश्वविद्यालय, थन्जावुर में प्रथम दीक्षांत समारोह में उपस्थित हैं ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. मीनाक्षी, डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, ब्र.कु. जयकुमार, ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. ज्ञान सुंदरी तथा अन्य।

2. कोच्चि में आयोजित शिक्षा प्रभाग के वार्षिक मीटिंग एवं रिट्रीट का उद्घाटन करने के पश्चात् डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. सुशीला, डॉ. ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. जयकुमार, डॉ. ब्र.कु. हरीन्द्र, ब्र.कु. विकास तथा अन्य।

**संरक्षक**
**राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर**
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं संरक्षक, शिक्षा प्रभाग
**परामर्श दाता**
**राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय**
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग
**राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू वहन**
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग
**कार्यकारिणी**
**राजयोगिनी ब्र.कु. सुमन**
राष्ट्रीय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग
**डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि**
निदेशक, मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स
**ब्र.कु. शिविका**
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग
**डॉ. आर.पी. गुप्ता**
मुख्यालय संयोजक, मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम
**प्रधान सम्पादक**
**राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल**
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग
**सह सम्पादक**
**डॉ. ब्र.कु. ममता,** अहमदाबाद
**सम्पादक मण्डल**
**ब्र.कु. सुन्दरलाल,** हरिनगर, दिल्ली
**ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली,** गुड़गाँव
**ब्र.कु. चुनेश,** शान्तिवन
**प्रकाशक**
**एज्यूकेशन विंग (RE & RF)** एवं ब्रह्माकुमारीज़
**प्रकाशन**
**ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस,** शान्तिवन, आबू रोड
**डिजाइनिंग सेटिंग**
**वैल्यू एज्यूकेशन ऑफिस,** शान्तिवन, आबू रोड

## अमृत सूची

❖ **सम्पादकीय**
स्वच्छता: सेवा भी, शिक्षा भी

❖ शिक्षा प्रभाग की वार्षिक मीटिंग एवं रिट्रीट

❖ First Convocation of Tamil University, Thanjavur

❖ शिक्षालयों की गिरती गरिमा बचाइये

❖ दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

❖ सकारात्मक चिन्तन के सिद्धांत

❖ 'मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये'

❖ 'World Parliament of Science, Religion and Philosophy'

## निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्यूकेशन ऑफिस, आनंद भवन, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

**E-mail:** shikshadarpan@bkivv.org
**Mobile No.:** +91 94276-38887 / +91 94140 -03961 / +91 94263-44040

**डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल**
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुख शान्ति भवन (अहमदाबाद)

सम्पादकीय



**डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल**
राष्ट्रीय संयोजक,
शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

# स्वच्छता: सेवा भी, शिक्षा भी

जीवन निर्वाह के लिए मानव को प्रारम्भ से अंत तक मूल्यों की धारणा अत्यन्त आवश्यक है। समय-समय पर ऐसे ही मूल्य मनुष्य के जीवन को उत्तरोत्तर आगे की ओर ले जाते हैं। मूल्यों की धारणा के लिए जरूरी है- उसकी शिक्षा। शिक्षा ही वह सरल माध्यम है जिससे जीवन जीने की कला का अविर्भाव होता है। आज के दौर में हमें पवित्रता, शान्ति और स्वच्छता के मूल्यों की अत्यन्त आवश्यकता है।

वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा जनजागृति के लिए विशेष स्वच्छता का आंदोलन चलाया जा रहा है। 'स्वच्छता' भी एक मूल्य है। कहा जाता है- 'जहाँ स्वच्छता वहाँ प्रभुता' अर्थात् परमात्मा का निवास भी वहीं होता है जहाँ स्वच्छता है।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का दूसरा देश है। स्वच्छता का मूल्य प्रत्येक भारतवासी को धारण करना होगा। सन् 1936 से ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षा में स्वच्छता को भी शामिल किया गया था। तब से निरंतर आज भी स्वच्छता को सेवा का स्वरूप देकर व्यावहारिक रूप से भी अपनाया गया है।

स्वच्छता सेवा भी है तो शिक्षा भी है। इस मूल्य को यदि शिक्षा के रूप में लें तो कह सकते हैं कि स्वच्छता तन की भी है तो मन की भी स्वच्छता है।

तन की स्वच्छता शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाती है। तंदुरूस्त बनाती है। शारीरिक बीमारी दूर हो जाती है। तन की स्वच्छता सामाजिक, आर्थिक रूप से मान-सम्मान दिलाता है। खुशी दिलाती है। तन को साफ रखना पवित्रता है। इससे हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है। आत्म-विश्वास भी बढ़ता है। साथ ही मन भी प्रफुल्लित रहता है। मन की स्वच्छता मानव में जीवन जीने का विश्वास जगाती है। मन में पैदा होने वाले व्यर्थ भावों को समर्थता में परिवर्तित करते हैं। व्यक्ति सक्षम होने लगता है।

स्वच्छता सेवा भी है। यदि प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को व्यावहारिक रूप में परिवर्तित कर दें तो यह शिक्षा सेवा का स्वरूप बन सकता है। यह एक प्रकार की सेवा है। प्रत्येक व्यक्ति स्वच्छ रहे तो एक-दूसरे के लिए भ्रातृत्व की भावना बढ़ेगी। इससे मानव मन की दूरियां कम होंगी। मानव सम्बन्धों में समरसता होगी। सम्बन्धों में मधुरता होगी। एक-दूसरे के प्रति स्नेह बढ़ेगा। मनुष्य अपने महान मूल्यों के द्वारा ही मानवता की चोटी तक पहुँचेगा। उसमें देवत्व प्रकट होगा। यही सबसे बड़ी सेवा होगी।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी के नेतृत्व में यह विद्यालय विभिन्न प्रभागों के माध्यम से स्वच्छता का यह आंदोलन पूरे भारतवर्ष में चला रहा है। भारत सरकार ने इस सेवा के लिए 'स्वच्छता ही सेवा' के अंतर्गत दादी जी को स्वच्छता का ब्राण्ड एम्बेसडर बनाकर इस सेवा के लिए आह्वान किया है जिसे प्रत्येक राजयोग की शिक्षा प्राप्त करने वाले भाई-बहन सेवा की भावना से कर रहे हैं। यही भावना मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाने वाली दैवी संस्कृति की प्रस्थापना के लिए निमित्त बनेंगी।

इस प्रकार 'Cleanliness is Next to Godliness' के अनुसार, स्वच्छता ही देवत्व की ओर ले जाने वाला मूल्य है। इससे ही अनेक मूल्यों का आह्वान होगा। यही सच्ची शिक्षा भी है, सेवा भी।

# शिक्षा प्रभाग की वार्षिक मीटिंग एवं रिट्रीट

## मीटिंग में शिक्षा प्रभाग की आगामी सेवाओं की दी गई जानकारी

शिक्षा प्रभाग की वार्षिक मीटिंग एवं रिट्रीट दिनांक 2 से 4 नवम्बर, 2018 तक केरल के राजयोग भवन, कोच्चि में आयोजित किया गया।

दिनांक 2 नवम्बर, 2018 को कार्यक्रम का उद्घाटन एवं स्वागत सत्र सम्पन्न हुआ। शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल ने सभा को सम्बोधित किया। आपने शिक्षा प्रभाग का प्रारम्भ से लेकर किस प्रकार यज्ञ में सेवायें प्रदान कीं, इस विषय में सबको बताया कि बाबा का जो प्लान है वह शिक्षा के माध्यम से सबको कैसे दिया जाए? बच्चों से लेकर आज महाविद्यालयों तक की कोर्स बनाकर ज्ञान दिया जा रहा है। यह विस्तार अच्छा है।

कोच्चि सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. राधा दीदी ने सबका स्वागत किया। डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि ने भी मूल्य शिक्षा के बारे में सबको अवगत कराया और सबका आभार प्रकट किया। ब्र.कु. सुमन ने मीटिंग के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। विक्रोली, मुम्बई की ब्र.कु. नीलिमा बहन ने सबको योगाभ्यास कराया। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन करके कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। सभी भाई-बहनों का परिचय सत्र भी हुआ। कार्यक्रम का संचालन अहमदाबाद की डॉ. ब्र.कु. ममता ने किया।

दिनांक 3 नवम्बर, 2018 को प्रात: 9 बजे योगाभ्यास के साथ मीटिंग का प्रारम्भ हुआ। शिक्षा प्रभाग की गतिविधियों से डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि ने अवगत कराया। तत्पश्चात् ब्र.कु. विकास ने यशवंत राव चव्हाण महाराष्ट्र खुला विश्वविद्यालय में हो रही सेवाओं की जानकारी दी। डॉ. ब्र.कु. ममता ने भी गुजरात में शिक्षा प्रभाग की सेवायें आगे किस प्रकार हो सकती है, उसके बारे में विस्तार से बताया।

शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने आशीर्वचन देते हुए शिक्षा प्रभाग की आगे की सेवाओं के प्लान को विस्तार से बताया। सायं 5 बजे

कटक की ब्र.कु. लीना ने कटक की सेवाओं के बारे में अवगत कराया। दिल्ली हरिनगर की ब्र.कु. नेहा ने भी दिल्ली की सेवाओं के बारे में जानकारी दी। दिनांक 4 नवम्बर, 2018 को प्रात: विक्रोली की नीलिमा ने वहाँ की सेवाओं का विस्तार से परिचय कराया और 'लेटर टू गॉड' प्रोजेक्ट के विषय में समझाया। साथ-साथ कोच्चि के स्थानीय वीआईपीज़ के लिए सेमिनार भी आयोजित किया गया।

सायं 5 बजे ब्र.कु. सुमन ने 'Thought Lab' के बारे में बताया। दिल्ली के ब्र.कु. संतोष ने 'SWAYAM' कार्यक्रम एवं डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि ने 'Self Esteem' विषय पर क्लास कराया। ब्र.कु. राधा, केरल में आई विनाशकारी बाढ़ का अनुभव सुनाते हुए बाबा की मदद कैसे मिली, इसके बारे में बताया। इस मीटिंग में पूरे भारत से लगभग 100 भाई-बहनों ने भाग लिया।

डॉ. ब्र.कु. ममता
अहमदाबाद

# First Convocation of Tamil University, Thanjavur

The First Convocation of TAMIL UNIVERSITY, THANJAVUR, Tamil Nadu was held at Madurai Brahma Kumaris, Vishwa Shanti Bhawan on 8th November, 2018.

Rajyogi B.K. Mruthyunjaya, Chairman, Education Wing, RERF, Mount Abu said that in the present competitive challenging world, each and every individual needs to inculcate virtues in their life for stability and success. He also congratulated the students for completing the value education courses.

Rajyogini B.K. Meenakshi, Director, Madurai Sub-Zone gave her blessings and said that deterioration of values are the root cause of all the problems in the world. To establish a world of peace and happiness, every person has to uplift oneself.

Brother Dr. B.K. Pandiamani, Director, Value Education Programmes and Brother B.K. Jayakumar, National Co-ordinator, Value Education Programmes gave felicitation address. Sister B.K. Uma, Co-ordinator, Madurai Sub-Zone gave welcome address. Sister B.K. Gyana Soundari, Co-ordinator, Value Education & Spirituality Courses, Tamil University, Thanjavur gave vote of thanks. Diploma Certificates were issued to the students at the end of the programme.

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय। साथ हैं लखनऊ सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. राधा तथा अन्य।

# शिक्षालयों की गिरती गरिमा बचाइये

एक बार गणतन्त्र दिवस पर एक वरिष्ठ विद्यालय के निमन्त्रण पर उनके ध्वजारोहण कार्यक्रम में जाना हुआ। हमारे पहुँचते ही मंच से सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा मेधावी विद्यार्थियों को इनाम वितरित किए जाने की भी घोषणा हुई। उद्घोषक ने भिन्नता को बनाए रखने की मानवीय चाहना को ध्यान में रख कर कार्यक्रमों का क्रम सजाया हुआ था।

## प्रश्नचिन्ह माँ सरस्वती की कर्मस्थली पर

हमें सामने की कुर्सियों पर बिठाया गया था। प्रधानाचार्य तथा कुछ विशिष्ट पदाधिकारी हमारे दाएँ-बाएँ बैठे थे। हमें कहा गया था कि आपको आध्यात्मिक प्रवचन करने हैं, हम उसी प्रकार की मन:स्थिति बना कर मंच पर टकटकी लगाए बैठे थे। परन्तु हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब एक 15 वर्ष की कन्या, जिसने नीचे से ऊपर तक शृंगार किया हुआ था और भड़कीली पोशाक पहनी थी, मंच पर आई और एक फिल्मी गीत पर, जिसका अर्थ बड़ा अश्लील और भद्दा था, बड़े ही हाव-भाव बना कर नाचना प्रारम्भ कर दिया। मैं तो जैसे असमंजस में पड़ गई कि आज का दिन कौन-सा है और यह क्या हो रहा है। मैंने अपने को असहज महसूस किया तो चारों तरफ नजरें घुमा कर देखा कि शायद कोई और भी इस तरह की मन:स्थिति में हो। परन्तु मेरे पाँवों के नीचे से जमीन तो पूरी ही खिसक गई जब मैंने अध्यापकों में से कइयों को एक-दूसरे के कंधे पर हाथ रख कर चमकीली आँखों से एक-दो का साथ देते हुए उस नृत्य का आनन्द लेते देखा। सभा में विराजमान उस क्षेत्र के तथाकथित सभ्य लोगों का भी वही हाल था। मन में विचार चला कि क्या यह विद्या का मन्दिर है, क्या यह माँ सरस्वती की कर्मस्थली है या कोई नाच-तमाशे का जमघट? संसार के लोगों को इतना तो ज्ञान रहता ही है कि जैसा समय वैसी स्थिति अच्छी लगती है। जैसे हँसी के मौके पर रोने वाला मूर्ख माना जाता है, इसी प्रकार, देश के गणतन्त्र दिवस समारोह के मंच पर देह-अभिमान पैदा करने वाले इस गीत को पेश करने की अनुमति देने वाले क्या सचमुच बुद्धिमान हैं? ऐसे कार्यक्रम कई थे पर मैंने एक का ही जिक्र करके वस्तुस्थिति को समझने, समझाने का प्रयास किया है। मेरे मन में शिक्षा के सम्बन्ध में जोरदार चिन्तन चल पड़ा और याद आया भारत का अतीत जब बच्चा घर में माँ-बाप के सान्निध्य में रह कर पहली पाठशाला पूरी कर लेता था, कर्म और व्यवहार की बहुत ऊँची बातें सीख लेता था। तैतरीय उपनिषद् में एक घटना का जिक्र आता है जिसमें एक पिता अपने 5 वर्षीय पुत्र से एक बीज मँगवाता है और तोड़ने के लिए कहता है और फिर पूछता है कि इसके भीतर क्या है, वह देखो। बच्चा बीज के गुदे के अलावा कुछ देख-समझ नहीं पाता है। तब पिता बताता है कि इस बीज में एक नया पेड़ छिपा है। बीज के श्रेष्ठ होने पर ही पेड़ श्रेष्ठ बनता है। इसी प्रकार, मानव शरीर की रचना भी उसके संकल्पों के अनुसार होती है। संकल्प श्रेष्ठ होते हैं तो शरीर निरोग और सुन्दर बनता है। विचारों के दूषित होने से शरीर भी रोगी और कुरूप हो जाता है। बच्चा बीज के माध्यम से विचारों के महत्त्व को बाल्यकाल से ही जान जाता है।

## प्राचीन गुरुकुल प्रणाली

इसके बाद बच्चे की जीवनचर्या गुरुकुलों के कठोर अनुशासन के अनुसार ढाली जाती थी। राजा लोग यदि चाहते तो उन गुरुओं को महलों में बुला सकते थे, उन्हें साधन-सुविधा देकर अपने राजकुमारों को भी साधनों के सुख के साथ पढ़ा सकते थे परन्तु ऐसा नहीं होता था। राजा या ऋषि का बच्चा दोनों ही एक-समान कठोर दिनचर्या व्यतीत करते थे। राजकुमार भी ब्रह्ममुहूर्त में उठते थे और फिर यज्ञ कर्म सम्पन्न करना, झाड़ू लगाना, पानी भरना, गउओं की सम्भाल करना, जंगल से लकड़ी लाना, खेतों में काम करना, गुरु के पाँव दबाना आदि सब काम करते थे। इससे उनको साधनायुक्त जीवन और मेहनत तथा सादगी के महत्त्व का ज्ञान हो जाता था। बड़े होकर वे कुन्दन से दमकते चरित्र के साथ गद्दी पर बैठते थे और प्रजा को साथ लेकर चलते थे, प्रजा के हर दर्द को समझते थे। महाभारत आख्यान में द्रोणाचार्य जी कहते हैं - 'आत्मिक उन्नति मेरे जीवन का ध्येय था। विद्या मेरी बड़ी पूँजी थी जिसको कभी किसी के हाथों बेचा नहीं वरन् मुक्त हाथों से बाँटा।' इस प्रकार विद्याध्ययन एक पवित्र कर्म था जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही मर्यादा की डोरी में बँधे रह कर जीवन को उज्ज्वल व चरित्रवान बनाते थे। वे समाज द्वारा मान, श्रद्धा तथा सहयोग के पात्र समझे जाते थे।

## या विद्या सा विमुक्तये

स्वतन्त्रता के बाद भारत सरकार ने शिक्षा पर बहुत जोर दिया। गाँव-गाँव में विद्यालय खोले, पाठ्य पुस्तकें छापीं, नए-नए पाठ्यक्रम पढ़ाए जाने लगे परन्तु धर्म निरपेक्षता की ओट में शिक्षा को आत्माविहीन कर दिया। शिक्षा का विशाल जाल और इसका बढ़ता साजो-सामान, बिना मूल्य प्रधानता के मृत के शृंगार जैसा हो गया है। सद्गुण हर व्यक्ति के लिए रोजी-रोटी की तरह आवश्यक हैं। इनके अभाव में तो मानव का जीवन पशु से भी बदतर हो जाता है। सद्गुण रूपी सम्पत्ति से विद्यार्थियों को वंचित करना तो देश के भविष्य के कर्णधारों को नाकाम और पंगु बनाना है। विद्या की देवी सरस्वती को सफेद परिधान में दिखाने का अर्थ है कि विद्या का सम्बन्ध सादगी और पवित्रता से है। इन दो गुणों की धारणा से प्रेम, सच्चाई, ईमानदारी, अनुशासन, समयबद्धता, एकाग्रता, शान्ति, सहयोग, भाईचारा, करुणा आदि गुणों का विकास होता है। उपरोक्त सभी गुणों से सज्जित व्यक्ति ही सच्चा शिक्षित है । वही नम्र हो सकता है और वही अहंकार आदि नकारात्मक वृत्तियों से मुक्त हो सकता है। तभी विद्या की परिभाषा देते समय कहा गया है - 'विद्या ददाति विनयम्' और 'या विद्या सा विमुक्तये' अर्थात् विद्या नम्र बनाती है और विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान करती है परन्तु अश्लीलता, देह-अभिमान, फैशन और विकारों

**शिक्षा का विशाल जाल और इसका बढ़ता साजो-सामान, बिना मूल्य प्रधानता के मृत के शृंगार जैसा है। सद्गुण हर व्यक्ति के लिए रोजी-रोटी की तरह आवश्यक हैं। इनके अभाव में तो मानव का जीवन पशु से भी बदतर हो जाता है। सद्गुण रूपी सम्पत्ति से विद्यार्थियों को वंचित करना तो देश के भविष्य के कर्णधारों को नाकाम और पंगु बनाना है।**

ने आज शिक्षक और शिक्षार्थी सभी की आत्माओं और पवित्र भावनाओं को जकड़ लिया है। कोई विरला ही अपने कर्त्तव्य पर अडिग देखने में आता है परन्तु बन्दरों की भीड़ में 'बया' की तरह वह भी अपने को अकेला और अन्यों से कटा-कटा महसूस करता है।

आज अवसरों की गरिमा को भुला दिया गया है। बात एक विद्यालय की नहीं है, किसी अन्य का भी यही किस्सा हो सकता है। बात हमारी दिशा की है। हम किस तरफ जा रहे हैं। अपने बच्चों को, आने वाली पीढ़ी को क्या सिखाना चाहते हैं? यदि आज हम यह समाचार पढ़ते हैं कि अध्यापक ने विद्यालय परिसर में छात्रा से दुर्व्यवहार किया या दुष्कर्म किया तो इन समाचारों की पृष्ठभूमि किसने तैयार की? क्या हमारी हर व्यवस्था, हर कार्यक्रम, हर आयोजन काम, क्रोध आदि विकारों के ईंधन से ही गति पाता है? क्या पवित्र अवसरों पर सुनने-सुनाने के लिए हमारे पास श्रेष्ठ गीतों और बातों का अकाल पड़ गया है या हमारी नजर उल्लू की तरह अंधकार भरी चीजों को ही टटोलने में अपनी सार्थकता समझती है?

## हमारे अन्य दस्तूर तो बदले नहीं

कोई कह सकता है कि आप इतनी असहज क्यों होती हैं, यह तो आजकल का दस्तूर है परन्तु मानव जीवन के अन्य दस्तूर तो बदले नहीं। हमने भोजन की जगह पत्थर खाना शुरू किया हो या शयन के लिए काँटों वाला बिस्तर लेना शुरू किया हो, ऐसा तो हुआ नहीं। फिर हमारे आयोजनों के, सुनने, देखने के दस्तूर क्यों बदल गए? ये हमें कहाँ ले जाएँगे। अल्पकाल की हँसी के लिए सदाकाल की चारित्रिक खुश्की क्या विवेकशीलता है? क्योंकि विचार रूपी भोजन ही प्रदूषित है तो आत्मा खुश्क तो होगी ही।

संकल्पों के ठहरे जल को गति देने वाली उपरोक्त घटना से मैंने बहुत कुछ सीखा। आशा है पाठकों को भी सोचने की लहर जरूर उठेगी। मुझे जब प्रवचन का समय मिला तो मैंने नम्रतापूर्वक अपना उपरोक्त चिन्तन सभी के समक्ष रखने का साहस किया जिसका अनुमोदन सभी अध्यापकों ने दबी ज़बान से किया। अगर इस लेख से कोई एक व्यक्ति भी मूल्य जागृति की मशाल थामने में कृत संकल्प होगा तो विद्या की देवी सरस्वती के वरदानों और दुआओं से अवश्य मालामाल होगा।

ब्र.कु.उर्मिला
शान्तिवन

**दीपावली प्रकाश का पर्व है। इसके पास एक कल्याणकारी, अलौकिक संदेश है - 'अपने भीतर के दीप को जलाओ; घर-घर में हरेक का आत्म-दीप जलाओ; इस आत्म-ज्ञान की रोशनी में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य की अमावस्या को जला दो; शुद्ध स्नेह, शान्ति, संतोष, आत्मिक भाव और नम्रता की पूर्णमासी अर्थात् पूर्णता के युग का आह्वान करो।'**

प्रकाश सबको प्रिय लगता है। प्रकाश में कोई भी चीज़ अपने सही रूप में दृष्टिगोचर होती है। अंधकार में ठोकर लगने की, चीज़ का विकृत रूप दिखाई देने की भूल हो सकती है। फिर वह प्रकाश सामूहिक हो, स्थान-स्थान पर हो तो बात कुछ और ही है।

बाहर के प्रकाश में, बाहरी जगत को तो हम प्रतिदिन ही देखते हैं। क्या 364 दिन इंतजार करने के बाद आने वाला यह महापर्व भी हमें बाहरी जगत का ही दर्शन करायेगा? क्या इसके आगोश में ऐसी कोई कीमती चीज़ नहीं है जो इसे अन्य दिनों से पृथकता प्रदान करे?

दीपावली आ रही है। यह अकेली नहीं आती, अपने साथ पर्वों का समूह लेकर आती है। दीपावली से पहले दो पर्व और बाद में दो पर्व। बीच में है दीपावली, आत्म-दीप के पूर्णरूपेण जगमग होने की प्रतीक। प्रथम दो पर्व उस विधि का उल्लेख करते हैं जिससे आत्म-दीप जग उठता है और बाद के दो पर्व उस सुखद परिणाम का वर्णन करते हैं जो आत्म-दीप जग उठने के बाद सामने आता है।

### ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार

जैसे किसी नाटक की सर्वप्रमुख घटना वह होती है जब उसका नायक उलझनों को सुलझन में, समस्या को समाधान में और कारणों को निवारण में बदल रहा होता है, उसी प्रकार सृष्टि रूपी महानाटक की सर्वप्रमुख घटना वही है जब इसके महानायक परमपिता परमात्मा सृष्टि पर अवतरित होकर पाप का नाश कर, पुण्य के युग की स्थापना करते हैं। इसलिए जितनी भी यादगारें, मन्दिर, शास्त्र, त्योहार, व्रत आदि बने हैं, वे भिन्न-भिन्न रूपों से इसी ईश्वरीय कर्त्तव्य का प्रदर्शन और वर्णन करते हैं। दीपावली भी ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार है। जब चारों ओर हिंसा, कामाचार, अपराध, व्यसन, कर्त्तव्यहीनता, गंदगी, स्वार्थ, धोखा, बेईमानी, बेइंसाफी, मैं-मेरा, अहंकार, भ्रष्टाचार आदि का अंधकार छा गया तो भगवान ने ज्ञान-दीप से उसे भगा डाला, इसलिए ईश्वरीय ज्ञान की महिमा के निमित्त है यह पर्व।

### धन तेरस

दीपावली से दो दिन पूर्व धन-तेरस नाम से त्योहार मनाया जाता है। इसका संबंध अन्न और स्वास्थ्य से है। वैद्य धनवन्तरि का जन्मदिन इस दिन मनाया जाता है और नई खरीफ की फसल की खीलें तैयार कर, नए बर्तनों में डालकर भगवान को भोग लगाकर बाद में स्वयं उपयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य बहुत बड़ा धन है। कहा जाता है, पहला सुख निरोगी काया। काया के निरोग होने पर ही धन या जन का सुख मिल सकता है। आध्यात्मिक साधना के लिए, आत्मा का दीप जलाने के लिए भी काया निरोगी चाहिए। काया को स्वस्थ बनाने के लिए मन और अन्न दोनों सात्विक चाहिएँ। हम केवल एक धन-तेरस के दिन नए बर्तनों में, नया अनाज भगवान को भोग लगाते हैं लेकिन एक दिन के भोग से तो आत्मा का दीप नहीं जल सकेगा। आत्म-दीप तो तब जले जब प्रतिदिन, पवित्र बर्तन में, सात्विक पदार्थों से बने भोजन का कुछ अंश डालकर, प्रकाश पुंज परमात्मा को भोग लगाया जाये और फिर उस प्रसाद रूप भोजन को परमात्मा की याद में ही स्वीकार किया जाये। भगवान जब प्रकाश की दुनिया अर्थात् सतयुग का निर्माण करने धरती पर आते हैं तो मानवात्माओं को शुद्ध-सात्विक प्रसाद रूप भोजन खिला-खिलाकर उनके बुझे दीप को ज्ञान-घृत से प्रज्वलित कर देते हैं। उसी की यादगार है यह धनतेरस का पर्व।

### नरक चतुर्दशी

धन-तेरस से अगले दिन नरक चतुर्दशी मनाई जाती है। पौराणिक कथा है कि नरकासुर नाम के दैत्य ने सोलह हज़ार कन्याओं को बंदी बना लिया था। भगवान ने दैत्य को मारकर उन सोलह हज़ार कन्याओं को मुक्त कराया, इसकी याद में मनाया

जाता है यह पर्व। यह कथा भी ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार है। नरकासुर अर्थात् संसार को नरक बना देने वाला असुर। देह का अभिमान ही नरकासुर है। काम, क्रोध ...ये विकार ही इसकी सेना हैं। सोलह हज़ार कन्यायें उन पवित्र आत्माओं की प्रतीक हैं जो भगवान के गले में माला के रूप में पिरोये जाने योग्य हैं परन्तु अज्ञान के कारण देह-अभिमान के चंगुल में फँस जाती हैं। उन प्रभु-प्रेमी आत्माओं की करुण पुकार सुन भगवान धरती पर अवतरित होते हैं, ज्ञान-दीप जलाकर देह-अभिमान रूपी दैत्य का नाश करते हैं और काम, क्रोध आदि विकारों के बंदीगृह से आत्मा को मुक्त करते हैं।

## दीपावली

नरक चतुर्दशी के बाद दीपावली मनाई जाती है। जब देह अभिमान रूपी दैत्य का नाश हो जाता है तो सृष्टि पर देवों का युग आ जाता है। अत: दीपावली है सर्व जगे हुए दीपकों का त्योहार अर्थात् सतयुग का यादगार जहाँ हर देवी-देवता आत्म-स्थित है।

दीपक मिट्टी का बना होता है। पच्चीस या पचास पैसे भर उसकी कीमत होती है परन्तु जब उसमें तेल और बाती डल जाती है और जल उठता है तो पूज्यनीय बन जाता है। उसको नमस्कार किया जाता है, उसकी रोशनी को सिर-माथे से लगाया जाता है। उस प्रज्वलित दीपक पर धन तथा पदार्थ वारी किये जाते हैं, उसे साक्षी मान प्रण किये जाते हैं लेकिन तेल चुकते ही, बाती बुझते ही दीपक को कचरे में फेंक दिया जाता है। मानव शरीर भी मिट्टी के दीपक सदृश ही है, जब इसमें आत्मा रूपी ज्योति प्रवेश हो जाती और ज्ञान रूपी घी से वह ज्योति निरंतर जगमगाती रहती है तो व्यक्ति पूज्यनीय बन जाता है। परन्तु, आत्मा के जाते ही, शरीर की गति मिट्टी के दीपक समान ही हो जाती है। अत: दीपावली है आत्मा की ज्योति ज्ञान-घृत से प्रकाशित कर जीवन को पूज्यनीय बनाने का यादगार। अमावस्या कलियुग का प्रतीक है, प्रकाशित रात्रि सतयुग का प्रतीक है। श्री लक्ष्मी जी का पूजन वास्तव में श्री लक्ष्मी समान श्रेष्ठ लक्षणों को धारण कर देव-पद प्राप्त करने की यादगार है। पूजा के दीपकों में बड़ा दीपक दीपराज परमात्मा शिव की यादगार है, जिसकी ज्योति से अन्य आत्मा रूपी दीपक भी जगमग हो उठते हैं। नये वस्त्र, नये सतयुगी संस्कारों को धारण करने के प्रतीक तथा नये बही खाते, कलियुगी कर्मबन्धन और पाप-खाते को खत्म कर, सतयुगी सुख के संबंध में जाने के प्रतीक हैं।

इस दिन किया जाने वाला दीप-दान, ज्ञान के द्वारा दूसरों को ईश्वरीय मार्ग दिखाने का प्रतीक है। चीनी के बने मीठे हाथी-घोड़े सतयुगी समृद्धि और अखुट खज़ाने, धन-दौलत के प्रतीक हैं। आतिशबाजी, पुरानी कलियुगी आसुरी प्रवृत्तियों के नाश के लिए चलने वाले घातक बमों की प्रतीक है। अंतर्मन की विकारों रूपी कालिमा, ईर्ष्या-द्वेष रूपी मक्खी-मच्छर, इच्छाओं-तृष्णाओं रूपी जाले, हिंसा-कपट रूपी कूड़ा-कर्कट समाप्त करके ही हम सतयुगी स्वच्छ दुनिया का राज-भाग पा सकते हैं इसलिए दीपावली पर घर का कोना-कोना स्वच्छ किया जाता है। ऐसे स्वच्छ मन वाले लोगों के निवास पर ही पवित्रता की देवी श्री लक्ष्मी का शुभागमन हो सकता है अर्थात् सृष्टि के स्वच्छ होने पर ही श्री लक्ष्मी-श्री नारायण सिंहासनारूढ़ होते हैं। स्वस्तिक का चिह्न, सृष्टि ड्रामा के पाँचों युगों के ज्ञान का प्रतीक है।

## गोवर्धन पूजा

दीपावली से अगले दिन गोवर्धन पूजा होती है। गोवर्धन अर्थात् गउओं का वर्धन। गउएँ समृद्धि की प्रतीक हैं। गउओं से समृद्ध, भारत के आदिकाल में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं। ऐसा भारत पुन: बनाने के लिए भगवान को चाहिए एक अंगुली का सहयोग। भगवान स्वयं भी गोवर्धन पर्वत उठाने रूपी सृष्टि-परिवर्तन के महाकार्य को कर सकते हैं पर अपने बच्चों का भाग्य बनवाने के लिए उनकी उंगली अवश्य लगवाते हैं। उंगली के तीन पोर – तन, मन, धन की शक्ति के प्रतीक हैं। जब हम सब मिलकर ईश्वरीय कार्य में तन, मन, धन से सहयोग देते हैं तो कलियुगी पहाड़ उठ जाता है और हरा-भरा सतयुगी साम्राज्य स्थापित हो जाता है।

## भाई-दूज

गोवर्धन पूजा से अगले दिन आती है यम द्वितीया या भाई-दूज। यादगार में दिखाते हैं कि यम और यमुना दोनों भाई-बहन थे। यम, धर्मराज के पद पर सुशोभित हुए। बहन हर वर्ष उन्हें टीका लगाती, मुख मीठा कराती और उनकी दीर्घायु की कामना करती। इसके बदले यम ने वरदान दिया कि इस दिन जो भी बहन अपने भाई को टीका लगाएगी, उसे यम का भय नहीं रहेगा। इस कथा के भी आध्यात्मिक अर्थ हैं। प्रथम तो यह है कि भगवान जब धरती पर आते हैं तो वे मनुष्यात्मा को सर्व संबंधों का सुख प्रदान करते हैं। आत्मायें उनके साथ भाई और बन्धु का भी नाता जोड़ती हैं और बदले में सतयुग-त्रेतायुग के 21 जन्मों तक अकाल-मृत्यु के भय से मुक्त होने का वरदान प्राप्त करती हैं। दूसरा अर्थ यह है कि भगवान जब धरती पर आते हैं तो मानवात्माओं के बीच, ज्ञान बल से भाई-बहन का पवित्र स्नेह प्रवाहित कर देते हैं जिस कारण सतयुगी सृष्टि में मानव-मानव के बीच तो प्रेम रहता ही है, शेर और गाय भी एक घाट पानी पीते हैं। प्रकृति भी मानव को सुख देती है। ऐसी स्नेह भरी दुनिया, जहाँ अकाल-मृत्यु प्रवेश नहीं कर सकती, के स्थापित होने का प्रतीक है यह भाई-दूज का पर्व

आइये, प्रण करें, इस पर्व-समूह में जिन मानवीय, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों का सन्देश समाया है, उन्हें हम प्रतिदिन ही जीवन में धारण करेंगे और हर दिन को ही प्रकाश-पर्व बना देंगे।

# सकारात्मक चिंतन के सिद्धांत

आपके विचार वास्तव में सकारात्मक हैं अथवा नहीं, इसकी जाँच सकारात्मक चिंतन के निम्नलिखित सिद्धांतों की मदद से की जा सकती है:

1. सकारात्मक चिंतन का आधार है आत्म-सम्मान बनाए रखना एवं संतुष्ट रहना।
2. आत्म-सम्मान का अर्थ है अपनी बात के प्रति आग्रह बनाए रखना एवं सीमा रेखा तय करना कि क्या स्वीकार्य है और क्या नहीं?
3. हमारा लक्ष्य है एकरस स्थिति को प्राप्त करना जहाँ हमारा मन शुद्ध रूप से सकारात्मक बना रहे क्योंकि हमारे विचार नकारात्मकता के प्रतिरोध से एवं किसी प्रकार के विरोध से पूर्णतः स्वतंत्र हैं।
4. नकारात्मकता को पहचानना कि इसका उद्देश्य क्या है एवं इसकी शक्ति को क्षीण कर देना, सकारात्मक चिंतन है क्योंकि अगर हम इसकी पहचान अच्छी तरह नहीं करेंगे तो हमें इससे प्रभावित हो जाने का खतरा बना रहेगा।
5. सकारात्मक चिंतन का अर्थ - सदैव स्वयं को अनुमान लगाने के भाव से बचाकर रखना। इसका अर्थ यह हुआ कि दूसरों के बारे में नकारात्मक चिंतन करने के प्रलोभन एवं जाल से खुद को बचाना जबकि ऐसा करने की इच्छा मन में कहीं छिप कर बैठी हुई है। इसका यह भी अर्थ है कि संसार को गुलाबी चश्में से देखने की वृत्ति से अपना बचाव करना और उसके प्रभाव में न आना। अनुमान आपके विचारों को कुरूप बनाता है और आपके दृष्टिकोण को बिगाड़ देता है।
6. दूसरों की चिंता करने से बचकर रहना सकारात्मक चिंतन है।
7. अपनी श्रेष्ठ स्थिति के लिए जागृत निज हित के दृष्टिकोण का विकास करना भी सकारात्मक चिंतन है। यह स्वार्थ भावना के विपरीत है। इसका अर्थ हुआ कि अपने को अच्छी तरह समझना और अपनी किसी कमजोरी के कारण धोखा न खाना।
8. आध्यात्मिकता आपको परमात्मा के हृदय में एक पवित्र, शांत एवं शक्तिशाली रत्न के रूप में स्थापित करता है। सकारात्मक चिंतन से आप स्वयं को आदर का पात्र मानते हैं और अपने लिए दूसरों की नकारात्मक दृष्टि को दरकिनार कर देते हैं। इस प्रकार आप स्व संशय के शक्तिशाली नकारात्मक बल के प्रभाव से भी बच जाते हैं।
9. ऐसी अनेक नकारात्मक चीजों की उपस्थिति में सकारात्मक विचार पनपते हैं। दीर्घकालीन सकारात्मक चिंतन से उपराम स्थिति प्राप्त होती है। जब संघर्ष के लिए कोई नकारात्मक विचार नहीं रह जाता है तब उपरामता जन्म लेती है।
10. आत्म-सम्मान का भाव यह है कि आप दूसरों की आलोचना करना अनुचित मानते हैं। आप किसी दूसरे द्वारा डराये जाने को कायरता मानते हैं। आप हर व्यक्ति को अपने व्यवहार के लिए उत्तरदायी मानते हैं।
11. आत्म-सम्मान के कारण आप दावा करते हैं कि आप एक शांतिप्रिय आत्मा हैं। अपनी इसी पहचान के कारण आप अपने मूल्यों एवं मूल्यनिष्ठा (Integrity) के प्रति निंदात्मक विचारों का अंदर एवं बाहर से विरोध करते हैं।
12. आत्म-सम्मान से आत्मविश्वास आता है। आपकी अपने आपमें आस्था बनी रहती है चाहे कोई प्रशंसा करे अथवा अपमान करे, चाहे हार हो अथवा जीत हो। आप प्रेम, शांति, विश्वास, साहस, लगन, उत्साह एवं प्रसन्नता का भाव बनाए रखते हैं।
13. आपके मन का संतोष आपके हृदय को विशाल बनाता है, दूसरों के लिए आपके मन में श्रेष्ठ भावनाएं होती हैं एवं सामाजिक वातावरण के साथ निर्भयतापूर्वक आप संतुलित सम्बन्ध बनाए रखते हैं।
14. अपना सम्मान रखने की वृत्ति आपको इतनी ताकत देती है कि आप उस स्थिति को पहचान लेते हैं जब कोई आपको गलत कार्य करने के लिए प्रलोभन देता है, आप इंकार कर देते हैं।
15. एक सकारात्मक चिंतक की ईमानदारी के सम्बन्ध में व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत नीति होती है। इस वजह से वह इस बात के लिए आश्वस्त रहता है कि उसका अंतर्ज्ञान एवं प्रत्यक्ष ज्ञान विश्वसनीय हैं। जब कोई झूठ बोलता है, तब एक ईमानदार आदमी उसे जान लेता है। आपके मन में अपनी इस क्षमता के लिए ऐसा आदर है कि आपको धोखा देना आसान नहीं है। जब आपको धोखा देने की कोशिश की जाती तो आप इस बात को मान लें कि आपकी जानकारी सही नहीं है, परंतु आप ऐसा नहीं मानते हैं।
16. आप उन बातों से धोखा नहीं खाते जो सकारात्मक नज़र आती है परंतु वास्तव में वे नकारात्मक हैं। नकारात्मकता सूक्ष्म एवं अदृश्य होती है। यह स्वयं द्वारा एवं दूसरों द्वारा आती है। आपकी संतुष्टता के विचार दिखावे पर आधारित नहीं होते हैं।
17. सकारात्मक चिंतन स्वतंत्र चिंतन होता है जो मूल्यों तथा ऊँचे सिद्धांतों पर आधारित होता है। यह परिस्थितियों की प्रतिक्रिया नहीं है और न ही यह व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तुओं पर आधारित है जैसा कि आप आशा करते हैं।
18. सकारात्मक विचारों का सहजतापूर्वक चिंतन करना, एक प्रकार से अपने इर्द-गिर्द छायी दूसरों की नकारात्मकता एवं स्वार्थ के जाल को नकारने जैसा है। जब तक आप दूसरों की स्वार्थ भावना को न जान जायें तब तक आप धोखा खाते रहेंगे।

# 'मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये'

**लातूर (महाराष्ट्र)।** ब्रह्माकुमारीज़ लातूर सेवाकेन्द्र द्वारा शिवाजी नगर में **'मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये'** कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण और उनकी पालना इत्यादि विषय पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुरेश पवार, महापौर, नगरपालिका, लातूर; श्री कौस्तूबजी दिवगावकर, आयुक्त, नगरपालिका, लातूर; ब्र.कु. नंदा, संचालिका ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र, लातूर; ब्र.कु. प्रयाग, संचालिका ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला, लातूर और डॉ. बालाजी हजारे के कर कमलों से हुआ।

विद्यार्थियों के नैतिक और चारित्रिक उत्थान के लिए एकदिवसीय मूल्य शिक्षा शिविर "Flying Angles" का आयोजन गवर्मेंट गर्ल्स हाई स्कूल, बिसरा में किया गया जिसमें सैकड़ों विद्यार्थियों सहित शिक्षकगण उपस्थित थे।

# 'World Parliament of Science, Religion and Philosophy'

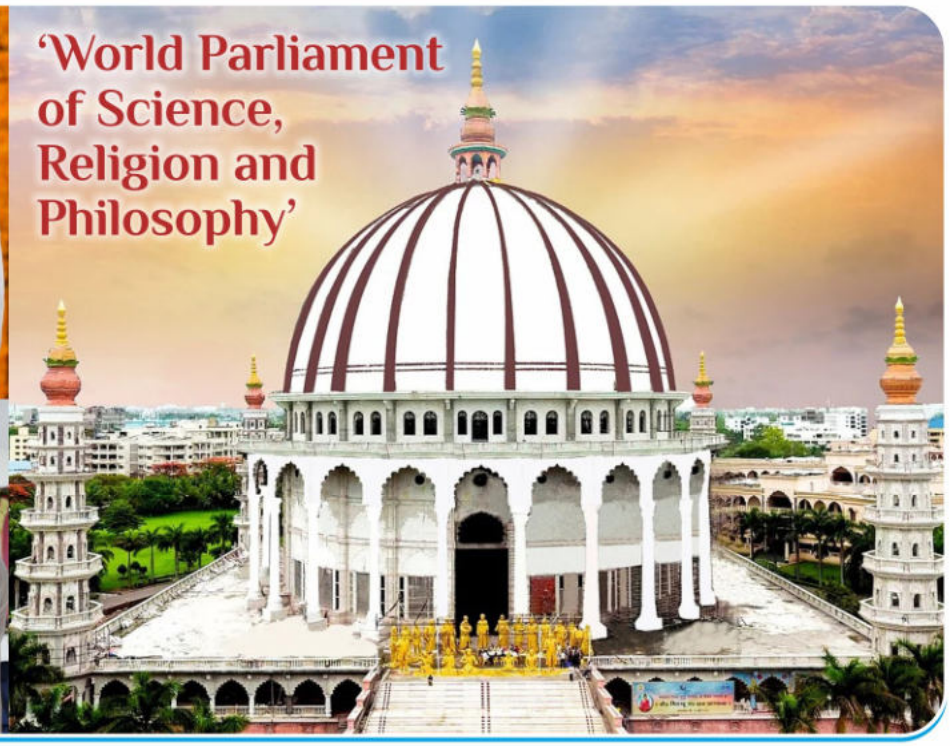

**Pune (Maharashtra)।** BK Mruthyunjaya was invited to address the **'World Parliament of Science, Religion and Philosophy'** at MIT, Rajbaug Campus, Pune. The World Parliament was organized at 'Philosopher Saint Shri Dnyaneshwara, World Peace Prayer Hall - Dome and World Peace Library', with the biggest Dome envisioned and designed by Prof. Dr. Vishwanath D. Karad, Founder of MAEER's MIT Group of Institutions, Pune. BK Mruthyunjaya was also felicitated by Prof. Dr. Vishwanath D. Karad during the programme.

**1. पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड)।** उत्तराखंड के राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. शिविका तथा खेल प्रभाग के ज़ोनल कोआर्डिनेटर ब्र.कु. मेहरचंद। **2. तिरुनेलवेली (तमिलनाडु)।** CII Educon - School Educator's Conference-2018 में मूल्य शिक्षा के बारे में बताते हुए वैल्यू एज्यूकेशन प्रोग्राम के डायरेक्टर डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि जी।

**Education Wing HQs. Office**
**B.K. Mruthyunjaya,** Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan, **Abu Road-307510 (Raj.)**
**E-mail:** educationwing@bkivv.org
**Education Wing, National Co-ordinators Office**
**B.K. Dr. Harish Shukla,** National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad-380022 (Guj.)**
**Mob. No. :** +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
**E-mail:** harishshukla31@gmail.com

**To,**